ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा विभेर्न मरिष्यसि। अथर्ववेद-5/30/8
हे आत्मन्! डर मत, तू मरेगा नहीं।
O soul! be not araid ! you will not die.

वर्ष 38, अंक 49 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 19 अक्टूबर, 2015 से रविवार 25 अक्टूबर, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

यज्ञ प्रेमी आर्य जनों ने अपने-अपने यज्ञकुंड में किया यज्ञ

एक रूप यज्ञ प्रशिक्षण एवं अभ्यास कार्यशाला सम्पन्न

यज्ञ को घर-घर-व्यक्ति-व्यक्ति तक पहुंचाना जरूरीः महाशय धर्मपाल

विद्यालयों एवं गुरुकुलों में आरंभ होगा यज्ञ प्रशिक्षण कार्यक्रम- धर्मपाल आर्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आर्य समाज कीर्तिनगर के सहयोग से दिनांक 10 से 18 अक्टूबर 2015 तक एक रूप यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें 65 धर्म प्रेमी आर्य जनों ने अपने-अपने यज्ञकुंडों में यज्ञ किया। कार्यक्रम में महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच.) की गरिमामयी उपस्थिति रही उन्होंने कहा कि यज्ञ को घर-घर व्यक्ति-व्यक्ति तक पहुंचाना बहुत बहुत आवश्यक है और इस कार्य को इन्हीं इसी प्रकार की कार्यशालाओं द्वारा किया जाना संभव है। उन्होंने उन सभी महानुभावों को बधाई दी जिन्होंने इस कार्यशाला में भाग लिया है तथा आशा व्यक्त की कि सभा इसे विद्यालयों के बच्चों एवं गुरुकुलों में भी आरंभ कराएगी। उन्होंने इस कार्यक्रम में सहयोगी महानुभावों का सम्मान एवं अपना आशीर्वाद दिया। सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने कहा कि निश्चित रूप से हम इस कार्यक्रम को शीघ्र ही अपने विद्यार्थी वर्ग तक पहुंचाएंगे। श्री धर्मपाल जी ने सह परिवार स्वयं भी इस कार्यक्रम भागीदारी की। श्री सतपाल भरारा व श्रीमती बीना ओबेराय जी एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने यज्ञ सामग्री, यज्ञ कुडों व कार्यक्रम को सुचारु रूप से सम्पन्न कराने के लिए विशेष आर्थिक सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम में प्रशिक्षित महानुभावों ने अपने अनुभवों को उपस्थित महानुभावों के साथ सांझा किया।

कालीकट, केरल से विशेष रूप से पधारे वेद पाठी आचार्यों ने बड़ी श्रद्धा से वेद पाठ एवं यज्ञ का प्रशिक्षण दिया।

दिल्ली सभा के उप प्रधान श्री ओमप्रकाश आर्य जी ने एवं आर्य समाज कीर्तिनगर के सभी अधिकारियों एवं सदस्यों ने इस कार्यक्रम के सफल संचालन

...शेष पेज 5 पर

चिता मंहगी या कब्र!

मंगलरु से करीब 20 किलोमीटर दूर मूदबिद्री गॉव में फूल विक्रेता प्रशांत पुजारी की सरेआम हत्या कर दी गयी पर वह बहुसंख्यक वर्ग से था मुस्लिम संगठन आरएफडी के लोगों ने प्रशांत की हत्या इसलिए कर दी क्योंकि प्रशांत ने गायों के अवैध तस्करों के खिलाफ सक्रिय होकर बड़े पैमाने पर छुड़ाया था। विचारणीय विषय ये है कि उसकी मुत्यु के पश्चात कितनी सांत्वना राशि उसके परिवार के निर्वाहन हेतु दी गई।

देश में एक अजीब तरह का माहौल खड़ा किया जा रहा कि देश में अल्पसंख्यक सुरक्षित नहीं है। माहौल खराब हो चुका है। एक अजीब विस्मय के साथ भय पैदा किया जा रहा है, बिल्कुल ऐसे जैसे छोटे बच्चे को पहले कुछ अनदेखे जीवों से डराया जाता था कि बेटा चुप हो जाओ वरना हऊआ आ जायेगा और वह खा लेगा आदि। दिन पर दिन जितनी कब्र मंहगी हो रही है, उतना ही माहौल बिगड़ रहा है, मीडिया के मुताबिक माने तो एक दु:खद घटना में इकलाख के परिवार को सरकार द्वारा करीब 55 लाख रुपए की सरकारी मदद और अन्य राजनैतिक दलों की तरफ से 30 लाख रुपए की मदद की गई और अब नोयडा के अन्दर चार फ्लैट और आवंटित किये जाने की तैयारी है। ये सब उस देश में हो रहा है जहां भूख के कारण पता नहीं रोजाना कितने गरीब बच्चे दम तोड़ देते हैं। पर सरकारों को गरीब की चिता की बजाय लाशों को धार्मिक आधार पर देखा जा रहा है। वरना कुछ रोज पहले मंगलरु से करीब 20 किलोमीटर दूर मूदबिद्री गाँव में फूल विक्रेता प्रशांत पुजारी की सरेआम हत्या कर दी गयी पर वह बहुसंख्यक वर्ग से था। मुस्लिम संगठन आरएफडी के लोगों ने प्रशांत की हत्या इसलिए कर दी क्योंकि प्रशांत ने गायों के अवैध तस्करों के खिलाफ सक्रिय होकर बड़े पैमाने पर गायों को छुड़ाया था। विचारणीय विषय ये है कि उसकी मुत्यु के पश्चात कितनी सांत्वना राशि उसके परिवार के निर्वाहन हेतु दी गई। साथ ही विचारणीय यह भी है कि कितने लेखकों ने अपने पुरस्कार लौटाने का क्रम इस घटना पर किया था और यह घटना तो एक बानगी मात्र है। ना जाने कितनी घटनाओं से समाचार पत्र भरे रहते हैं। शायद यही वजह कही जा सकती है कि बहुसंख्यक होने की वजह से उसकी चिता को मूल्य तो दूर की बात सांत्वना की एक आवाज तक नहीं सुनायी दी क्योंकि फिलहाल भारत के राजनीति के बाजार में कब्र मंहगी और चिता सस्ती बिक रही है। भारत की मीडिया का एक बड़ा धड़ा अपनी तेज नाक से कब्र तो खोज लेता हैं पर चिता से उठता धुआं उन्हें दिखायी नहीं देता। आज भारत के साहित्यकार अफसोस मना रहे हैं, दुखी हो रो रहे हैं लेकिन यह सरस्वती के पुजारी इस बात को क्यों नही सोचते कि हिंसा कहीं भी हो सकती है और हिंसा किसी की भी जान ले सकती

...शेष पेज 5 पर

बिना हिन्दुओं के कश्मीर वार्ता कैसी!
विशेष संपादकीय-पढ़ें पृष्ठ 2 पर

देवताओं के नाम पर पशु हत्या मांस भक्षण महापाप है, कलंक है
विशेष लेख पढ़ें पृष्ठ 3 पर

सम्पादकीय

बिना हिन्दुओं के कश्मीर वार्ता कैसी!

जब से सृष्टि का निर्माण हुआ न जाने दुनिया में कितनी बार सत्ता बदली। लेकिन 15 अगस्त 1947 को जब हिन्दुस्तान की सत्ता बदली तो सत्ता के साथ जनता भी बदली। तय हुआ हिन्दू इधर आ जाओ मुस्लिम उधर चले जाओ! कुछ गये कुछ नहीं गये यह तो सभी जानते हैं। पर 68 साल से दर्द झेलता कश्मीरी हिन्दू कहां जाये? यह प्रश्न पिछले 68 साल से चीख रहा है। हमेशा भारत पाक वार्ता होती रही कश्मीर का मुद्दा उठता रहा लेकिन भारत ने किसी भी मंच या बैठक में कभी भी उन कश्मीरियों का मुद्दा नहीं उठाया, जिन्हें कश्मीर घाटी से सबसे पहले बाहर निकाला गया जबकि सच सब जानते हैं कि कश्मीर पर इन हिन्दू परिवारों का मौलिक अधिकार है। जब पाकिस्तान वहां रह रहे कश्मीरी मुसलमानों के हक की बात करता है, तो भारत को भी इन्हें वहां पुन: बसाने का मुद्दा वार्ता में उठाना चाहिये।

एक सज्जन ने अपनी बात सोशल मीडिया में जिस प्रकार रखी हम उसको ज्यों का त्यों इसमें प्रस्तुत कर रहे हैं। ''पाक अधिकृत कश्मीर से जिन हजारों परिवारों को वहां से भगाया गया वह 22 अक्टूबर 1947 की सुबह थी,कश्मीर में मुज्जफराबाद- उड़ी मार्ग के चिनारी गांव में 20-25 हिन्दू परिवारों में नवरात्रों की अष्टमी मनाई जा रही थी। अत: घर गाँव में कन्याओं का पूजन हो रहा था कि अचानक शोर उठा, भागो, हमला हो गया है, साथ में गोलियों की आवाजें भी आ रही थीं। मेरी आयु उस समय दो वर्ष से कम थी भाग कर जितने लोग थे, एक ट्रक में आ गये, ट्रक 5 या 7 किलोमीटर चलने के बाद रुक गया। एक ओर दरिया बह रहा था और दूसरी ओर से गोलीबारी की आवाजें और आग के शोले आसमान को छू रहे थे। मेरे माता-पिता ने देखा एक सिख अपनी 3 वर्ष की बेटी को दरिया में डालने का प्रयास कर रहा है 'पिताजी ने रोका तो उसने बताया कि उसकी पत्नी को वे लोग ले गये है, और डर है कि कहीं उसकी बेटी भी उनके हाथ न आ जाये।' हमारा परिवार जब श्रीनगर पहुँचा तो पता चला श्रीनगर पर हमला हो चुका है। घरों में आग लगायी जा रही थी, भयंकर मारकाट मची थी। इस मारकाट से बचाने के लिये भारत सरकार ने आर्मी को वायुयान से श्रीनगर भेजा और जो हिन्दू परिवार एअरपोर्ट पर सकुशल आ गये उन्हें हवाई जहाजों से दिल्ली और शेष भारत में भेजा गया। इस प्रकार एक-एक करके कश्मीर से हिन्दुओं को भगा कर घाटी को हिन्दुओं से शून्य कर दिया गया।''

यह कहानी किसी एक अकेले आदमी की जुबानी नहीं हर कोई जानता है, कश्मीर में हिन्दुओं के साथ क्या हुआ पर सत्ता हमेशा धृतराष्ट्र बनकर हिन्दुओं के अपमान और कत्ल का नंगा बीभत्स कांड देखती रही। इसके बाद 4 जनवरी 1990 को आफताब, एक स्थानीय उर्दू अखबार ने हिज्ब-उल मुजाहिदीन की तरफ से एक प्रेस विज्ञप्ति जारी की, सभी हिन्दू अपना सामान पैक करें और कश्मीर छोड़ कर चले जायें। एक अन्य स्थानीय समाचार पत्र, अल सफा ने इस निष्कासन आदेश को दोहराया। मस्जिदों में भारत और हिन्दू विरोधी भाषण दिये जाने लगे। सभी कश्मीरी हिन्दुओं को कहा गया कि इस्लामिक ड्रेस कोड अपनायें। सिनेमा और वीडियो बंद कर दिये गए। लोगों को मजबूर किया गया कि वे अपनी घड़ी पाकिस्तान के समय के अनुसार कर लें। सारे कश्मीर की मस्जिदों में एक टेप चलाया गया जिसमें मुस्लिमों को कहा गया कि वे हिन्दुओं को कश्मीर से निकाल बाहर करें। उसके बाद जो हुआ सारे कश्मीरी मुस्लिम सड़कों पर उतर आये। उन्होंने कश्मीरी पंड़ितों के घरों को जला दिया, कश्मीरी पंड़ित महिलाओं का बलात्कार करके, उनकी हत्या करके उनके नग्न शरीर को पेड़ पर लटका दिया गया और बाकियों को लोहे की गरम सलाखों से मार दिया गया। बच्चों को स्टील के तार से गला घोटकर मार दिया गया। कश्मीरी महिलायें ऊँचें मकानों की छतों से कूद-कूद कर जान देने लगी। कश्मीरी ही कश्मीरी का कत्ल करता चला गया।

जम्मू में पिछले दो दशकों से विस्थापित जीवन जी रहे रामजीलाल के अनुसार 1990 में कई हिन्दू नेताओं की हत्या के बाद 300 सौ से ज्यादा महिलाओं और पुरुषों की नृशंस हत्या की गयी। जो हिन्दू नर्स श्रीनगर के सौर मेडिकल कॉलेज में काम करती थी, उसका सामूहिक बलात्कार किया गया और मार-मार कर उनकी हत्या कर दी गयी यह खूनी खेल चलता रहा और अपने सैकुलर राज्य केन्द्र सरकार और मीडिया ने कुछ नहीं किया। साढ़े तीन लाख कश्मीरी पंडित अपना धर्म बचाकर कश्मीर से भाग गये कश्मीरी पंडित जो कश्मीर के मूल निवासी हैं उन्हें कश्मीर छोड़ना पड़ा। पर मीडिया ने यह सच देश के लोगों को कभी नहीं बताया। इसलिए देश के लोगों को आज तक नहीं पता चल पाया कि कश्मीर में क्या हुआ था! देश- विदेश के लेखक चुप रहे, भारत का संसद चुप रहा, देश के सारे सैक्यूलर राजनैतिक दल चुप रहे। आज भी अपने देश का मीडिया 2002 के दंगों में व्यस्त है असम, केरल, बंगाल में जब मुस्लिम धर्मान्धता में हिन्दुओं पर हमला करते हैं तब मीडिया यह कहकर चुप बैठ जाती है कि देश में अशान्ति फैलेगी पर यही मीडिया जो कश्मीरी पंडितों के दर्द को अशान्ति कहकर टाल देती है वही मीडिया दादरी की घटना को 11 दिनों तक लाईव दिखाती है जिसमें सिर्फ एक मुस्लिम की हत्या हुई है।

कश्मीर का नाम कश्यप ऋषि के नाम से पड़ा था। कश्मीर के मूल निवासी सारे हिन्दू थे। कश्मीर की संस्कृति 5000 साल पुरानी है और अब बात की जा रही है कश्मीरियों के हक की। यह कौन से कश्मीरी हैं? वे जिन्होंने कश्मीर में हिन्दुओं को मारा, जलाया, भगाया आज किन के हक की बात होती है! भारत सरकार को स्पष्ट रूप से कह देना चाहिये कि कश्मीर पर बात बिना कश्मीरी हिन्दुओं के हित की अनदेखी कर नहीं होगी जो कश्मीर के असली वारिस हैं। ***-सम्पादक***

स्वाध्याय

प्रभु के रक्षण के निराले ढंग

महीरस्य प्रणीतय: पूर्वीरुत प्रशस्तय:। नास्य क्षीयन्त ऊतय:।। -ऋ. 6/45/3
ऋषि : बार्हस्पत्य: शंयु:।। देवता-इन्द्र:।। छन्द:-गायत्री।।

शब्दार्थ - अस्य = इस परमेश्वर के प्रणीतय:= आगे ले-जाने के, उन्नत करने के मार्ग मही:= बड़े हैं उत प्रशस्तय: पूर्वी:= और इसकी प्रशंसाएं सनातन हैं अस्य ऊतय: न क्षीयन्ते= इसकी रक्षाएं कभी क्षीण नहीं होती।

विनय - मैं क्या बतलाऊं प्रभु किन-किन उद्भुत ढंगों से मनुष्य को उन्नत कर रहे हैं। जब मनुष्य रोता और पीटता रहता है, जब उसके अन्दर ऐसे युद्ध चल रहे होते हैं कि उसे विफलता-पर विफलता ही मिलती जाती है, पीछे से पता लगता है कि उस समय में, उन्हीं दिनों में उसके अपनी उन्नति का बड़ा रास्ता तय कर लिया होता है। मनुष्य प्रभु की कल्याणमयी घटनाओं को नहीं समझ पाता कि उन घटनाओं से कभी-सुदूर भविष्य में उसका कल्याण कैसे सधेगा। प्रभु के उन्नत करने वाले मार्ग इतने महान् और विशाल हैं कि अल्पदृष्टि मनुष्य उन्हें पूर्णता में कभी नहीं देख सकता, अतएव वह कल्याण की ओर जाता हुआ भी घबराया रहता है। प्रत्येक मनुष्य अपनी-अपनी प्रकृति-स्वभाव के अनुसार अपने-अपने निराले ढंग से उन्नत व विकसित हो रहा है। जब मनुष्य अपने ही उन्नति-मार्ग को नहीं समझ पाता तो उसके लिए दूसरे मनुष्यों के विकास का दावा भरना कितना कठिन साहस है! उस अगम्य लीलावाले प्रभु की जिस 'प्रणीति' से जिस व्यक्ति ने उन्नति पायी होती है वह व्यक्ति उसी रूप में उस प्रभु के गीत गाता फिरता है। इस तरह अनादिकाल से मनुष्य नाना प्रकार से उसकी प्रशस्तियां गाते आ रहे हैं और गाते रहेंगे। मनुष्य उसकी स्तुतियों का कैसे पार पाएं? भक्त पुरुष तो उस प्रभु की रक्षाओं का-रक्षा के प्रकारों का ही अन्त नहीं देखता। प्रभु की रक्षण-शक्ति कभी क्षीण नहीं होती। वहां से रक्षणों का एक ऐसा सनातन प्रवाह बह रहा है कि वह सब मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट-पतंगों की, सब स्थावर और अस्थावर जगत् की,एक ही समय में अकल्पनीय प्रकारों से रक्षा कर रहा है। मनुष्य अपने पिछले कुछ अनुभवों के आधार पर सोचता है कि ऐसा होने से मेरी रक्षा हो जाएगी, अत: वह वैसा ही होने की प्रभु से प्रार्थना करता है और वैसी ही आशा करता है, परन्तु इस बार प्रभु एक बिल्कुल नये मार्ग से रक्षा करके मनुष्य को आश्चर्यचकित कर देते हैं। एवं, नये-से-नये अकल्पनीय ढगों से मनुष्य को प्रभु का रक्षण मिलता जाता है, तब पता लगता है कि प्रभु संसार का सब प्रकार से कल्याण ही कर रहे हैं। हम मानें या न माने, पर वे तो हमें मारते हुए भी हमारी रक्षा कर रहे हैं। अहो, देखो उस प्रभु के उन्नति-मार्ग महान् हैं, उसकी रक्षा के प्रकार अनन्त है।, जानने वाला सब संसार उसकी स्तुतियां-ही-स्तुतियां गाता है।

साभार : वैदिक विनय

साभार : वैदिक विनय

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

ग्रन्थ परिचय

शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण

प्रश्न 1. 'शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण' नामक ग्रन्थ किस विषय पर लिखा गया है?

उत्तर : यह ग्रन्थ सहजानन्द द्वारा प्रतिपादित स्वामी नारायण मत का खण्डन करने के लिए लिखा गया है। इस ग्रन्थ का दूसरा नाम 'स्वामी नारायणमत खण्डन' भी है।

प्रश्न 2. स्वामी सहजानन्द कौन थे?

उत्तर : इस मत के अनुयायी लोग सहजानन्द को नारायण का अवतार मानते थे।

प्रश्न 3. नारायण से अभिप्राय क्या है?

उत्तर : गोलोक और वैकुण्ठ में रहने वाले चतुर्भुज, द्विभुज और लक्ष्मीपति ईश्वर को वे नारायण मानते हैं।

प्रश्न 4. खण्डन किसको आधार मान कर किया गया है?

उत्तर : सहजानन्द द्वारा रचित शिक्षापत्री के अंशों को लेकर ही स्वामीजी ने असत्य और वेद के विरुद्ध बातों का खण्डन किया है।

प्रश्न 5. यह पुस्तक मूलत: कौन-सी भाषा में है?

उत्तर : मूलत: संस्कृत भाषा में है, उसका गुजराती अनुवाद स्वामी जी ने किया। उसी गुजराती से हिन्दी भाषा में भी अनुवाद किया गया है।

प्रश्न 6. इस ग्रन्थ का रचना काल क्या है?

उत्तर : इस ग्रन्थ की रचना का समाप्ति काल संवत् 1931, पौष मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी (13 जनवरी सन् 1875, रविवार) का दिन है।

प्रश्न 7. इस पुस्तक का गुजराती अनुवाद सहित प्रथम संस्करण कब और कहां से प्रकाशित हुआ था?

उत्तर : इसका गुजराती अनुवाद सहित प्रथम संस्करण संवत् 1933 के आरम्भ में 'ओरियण्टल प्रेस' बम्बई से प्रकाशित हुआ था।

प्रश्न 8. पुस्तक का गुजराती अनुवाद किसने किया था?

उत्तर : इसका गुजराती अनुवाद महर्षि के प्रमुख शिष्य श्यामजी कृष्ण वर्मा ने किया था।

साभार : महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें। -मो. 09540040339

देवताओं के नाम पर पशु हत्या मांस भक्षण महापाप है, कलंक है

दशहरा व दीपावली त्योहार आ रहे हैं। दशहरे, बकरीद व काली मन्दिरों की पूजा में लाखों निरीह पशुओं की हत्या की जाती है और इसको धर्म का नाम दिया जाता है। विवेकशील मनुष्य भी चुपचाप इस पाप के कृत्य को देखता रहता है निरपराध पशुओं की हत्या से वातावरण अत्यन्त दूषित हो जाता है और मनुष्यों के चित्त पर गहरा प्रभाव डालकर संस्कारों में हिंसक प्रवृत्ति वाला बना देते हैं और सामान्य जीवन में थोड़ी-थोड़ी बातों में मनुष्यों की हत्यायें आये दिन देखने को मिलती हैं। ईश्वर की व्यवस्थानुसार पशु बलि हत्या व जीभ के स्वाद के लिए मांस खाना महापाप है।

दूषित विकृतियां- अज्ञानता के कारण देवताओं के नाम पर पशुओं की हत्या तथा मांस खाने के लिए पशु हत्या दोनों ही गलत हैं? देवताओं के आगे पशु हत्या करके उन देवताओं की महिमा तो समाप्त होती ही है अपितु वह उल्टा श्राप देते होंगे। सभ्य समाज क्रूर हत्याओं को निन्दित समझता है। जिसका मनुष्य निर्माण नहीं कर सकता है उसकी हत्या करने का क्या अधिकार है। इन हत्याओं के कारण विश्व का वातावरण अत्यन्त दूषित हो गया है। आज की मानवता शर्मसार होकर तार-तार हो रही हैं।

मंदिरों में बूचड़ खाने वाला दृश्य :- देवता किसी का अहित नहीं चाहते अपितु उपकार ही करने वाले होते हैं। किन्तु अज्ञान के कारण व ईश्वरीय

आज्ञा वेदों की शिक्षाओं से रहित होने के कारण मन्दिरों में भैंसा, बकरा, मुर्गा काटकर बूचड़ खाने का दृश्य उपस्थित हो जाता है और सामान्य लोगों के संस्कार हिंसक बनते चले जाते हैं।

अज्ञान व अन्धविश्वास की चरम सीमा : हृदय कांप जाता है जब निरीह बेजुबान पशुओं की देवताओं के नाम पर हत्या की जाती है। शास्त्रों में आठ पापी बताये जाते हैं, मारने वाला, बेचने वाला, खरीदने वाला, पकाने वाला, परोसने वाला, सम्मति देने वाला, खाने वाला, मूक देखने वाला। किसी भी आर्ष शास्त्रों में देवताओं को प्रसन्न करने के लिए जीव हत्या नहीं लिखी है।

भारतीय धर्म वेद प्रधान धर्म है : भारत का धर्म, दया, प्रेम, मानवता और प्राणी मात्र के लिए स्नेह सिखाने वाला है और वेदों की शिक्षाओं पर आधारित है। वेदों में कहीं पर भी देवताओं को खुश करने के लिए पशुओं की तथा मनुष्यों की हत्या करने का विधान नहीं है।

विश्व के धर्म गुरु मूक बनकर तमाशा देख रहे हैं : अधिकांश विश्व के धर्म गुरु इन निरपराध हत्याओं को

भारत का धर्म, दया, प्रेम, मानवता और प्राणी मात्र के लिए स्नेह सिखाने वाला है और वेदों की शिक्षाओं पर आधारित है। वेदों में कहीं पर भी देवताओं को खुश करने के लिए पशुओं की तथा मनुष्यों की हत्या करने का विधान नहीं है।

गलत समझते हैं किन्तु इसका विरोध खुलकर नहीं करते हैं। क्या धर्म गुरुओं का कर्त्तव्य नहीं है कि इन अन्धविश्वासों को खत्म करने में एकजुट होकर आवाज उठायें।

देवी-देवताओं के नाम पर पशु हत्या से नरक मिलता है: देव यज्ञ, पितृ श्राद्ध तथा अन्य कल्याणकारी कार्यो के लिए जो व्यक्ति हिंसा करता है वह नरक में जाता है उसका यह जन्म व आने वाला जन्म दु:खमय हो जाता है और पशु के शरीर पर जितने रोम होते हैं उतने वर्ष तक नरक में रहता हैं और सारा परिवार भी दण्ड भुगतता है।

जीव हत्या का कुपरिणाम: स्वार्थी व धर्मविहीन लोगों ने साधारण लोगों को धर्म के नाम पर भ्रमित करके अन्धविश्वास फैलाकर पशु हत्या करने का रिवाज बनाया हुआ है। इससे देवता प्रसन्न होना तो दूर की बात, अपितु कुपित होकर उल्टा श्राप देते हैं।

पशु हमारे जीवन का आधार है इन पर अत्याचार न करो: बिना पशुओं के मानव जीवन अधूरा है ये हमारा बड़ा उपकार करते हैं, दूध, खेती, सवारी, ऊन व अन्य कारणों से हमारा उपकार करते हैं।

पशु बलि से पूजा अपवित्र होती है: देवी-देवताओं को पशु वध करके उन्हें खुश करने का जो कार्य करते हैं वह अति भ्रम है। अपितु वह जिसको पूजा मानकर कार्य करते हैं वह अपवित्र हो जाती है। पूजा का अर्थ सत्कार है और सत्कार सत्य का ही हो सकता है।

भारत को आर्य व्रत ही रहने दो राक्षस भूमि न बनाओ: भारत वर्ष अनादि काल से ही वेदों की शिक्षा संस्कृति व संस्कार व वैदिक धर्म को फैलाने वाला विश्व गुरु रहा है। अवैदिक मान्यताओं से समाज में तमाम बुराइयां फैली हैं। यह नितान्त सत्य है कि पशुओं की हत्याओं से समाज में कभी भी सुख-शान्ति नहीं आ सकती है। पशुओं की हत्या से मानव के संस्कारों में हिंसक प्रवृति बनती है। जिसका वर्तमान वातावरण प्रत्यक्ष प्रमाण है। आज की बढ़ती जनसंख्या और भेड़चाल से मनुष्य विवेकहीन होता जा रहा है। आज अन्धविश्वास चरम सीमा पर है। यदि संसार के तमाम धर्म गुरु इस समस्या को खत्म करने में एकजुट हो जायें तो मानवता का सुधार हो जायेगा। सम्पूर्ण भारतवर्ष भी यदि पशु हत्या रोकने में सफल हो जाए तो पुन: भारत विश्व धर्म गुरु बन सकता है।

आर्य समाज संगठन पिछले कई सौ सालों से इस अन्धविश्वास को रोकने का कार्य कर रहा है और उत्तराखण्ड में सफल हो रहा है। उत्तराखंड के कई मंदिरों में पशु बलि बन्द हो गई है।

-उमेद सिंह विशारद, देहरादून

संस्कृतम्

सर्वे गुणा: काञ्चनमाश्रयन्ति (धनोपार्जनम्)

सर्वे जना: संसारे सुखमिच्छन्ति। सुखं च धनेनैव प्राप्तुं शक्यते। अतो धनोपार्जनस्य महत्यावश्यकता भवति। अद्यत्वे यत्र कुत्रचिदपि गच्छामस्तत्र सर्वत्रैव धनस्य माहात्म्यं पश्याम:। धनेन विना न विद्योपार्जनं कर्तुं शक्यते, न जीविकानिर्वाहश्च भवति। सुखार्थं परोपकारार्थं त्यागार्थं दानार्थं भोगार्थं विवाहार्थं पुत्रादिसंरक्षणार्थं गार्हस्थ्यसंचालनार्थं भोजनार्थं भवननिर्माणार्थं सर्वत्रैव धनस्यावश्यकता भवति। यस्य समीपे धनं नास्ति, तस्य कश्चिदपि अभिलाषो न पूर्तिमेति। साधूक्तं केनापि कविना-

बुभुक्षितैर्व्याकरणं न भुज्यते, पिपासितै: काव्यरसो न पीयते। न छन्दसा केनचिदुद्धृतं कुलं, हिरण्यमेवार्जय निष्फला गुणा:।।1।।

वेदेऽपि धनोपार्जनस्य धनस्वामित्वस्य च आदेश: प्राप्यते-

वयं स्याम पतयो रयीणाम्।।2।।

यस्य समीपे धनं भवति स एव सुखेन शेते। स एव संसारे कुलीनो विद्वान् गुणज्ञो दानी वक्ता प्रभु: इति कथ्यते। अत एवोच्यते-

यस्यास्ति वित्तं स नर: कुलीन:, स पण्डित: स श्रुतवान् गुणज्ञ:।

स एव वक्ता स च दर्शनीय:, सर्वे गुणा: काञ्चनमाश्रयन्ति।।3।।

धनैर्निष्कुलीना: कुलीना भवन्ति, धनैरापदं मानवा निस्तरन्ति।

धनेभ्य: परो बान्धवो नास्ति लोके, धनान्यर्जयध्वं धनान्यर्जयध्वम्।।4।।

यस्य समीपे धनं भवति, तस्यैव मित्राण्यपि भवन्ति, न तु निर्धनस्य। यतो हि-

यस्यार्थास्तस्य मित्राणि, यस्यार्थास्तस्य बान्धवा:।

यस्यार्था: स पुमांल्लोके, यस्यार्था: स च पण्डित:।।5।।

प्राचीनै: मुनिभिरपि धनस्योपयोगिता स्वीकृता आसीत्। अत एव तै: धर्मार्थकाममोक्षात्मे चतुर्वर्गे अर्थस्य धर्मान्तरं स्थानं कृतमस्ति।

धनोपार्जनस्य बहूनि साधनानि सन्तिसदोषाणि निर्दोषाणि च। चौर्येण, कपटेन, छलप्रपञ्चेन, मिथ्याभाषणेन, उत्कोचग्रहणेन, अन्यैश्चानुचितसाधनैर्धनं प्राप्तुं शक्यते, परन्तु तद्धनं विनाशकरमेव भवति। अत: सर्वै: सर्वदा सदुपायैरेव धनोपार्जनं कर्तव्यम्। विद्याध्यापनेन, कृषिकर्मणा, व्यापारेण, सेवया, परिश्रमेण वा यद् धनमुपार्जितं भवति, तत् फलति। तेनैव मनुष्यस्य श्रीवृद्धिर्भवति। अत: सर्वै: सदुपायैरेव सदा धनोपार्जनं कर्तव्यम्, सत्कर्तसु च तस्य व्यय: करणीय:। **साभार: रचनानुवादकौमुदी**

रचनानुवादकौमुदी

(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

आर्य जगत का प्रेरणा स्रोत : एक गांव ऐसा भी

छत्तीसगढ़ राज्य अंतर्गत जिला रायगढ़ स्थित शुकुल पट्टी नामक एक ऐसा गांव है जो आर्य जगत के लिए प्रेरणा स्रोत बना हुआ है। उक्त गांव में वर्ष 1972 में एक ऐसे महान आर्य समाजी आए जिन्होंने पूरे गांव को वैदिक विषयों की जानकारी दी और नित्य सायंकाल संध्या की परम्परा की शुरूआत की। आज भी गांव की चौपाल पर पूरे गांव के बच्चे युवक-युवतियां, बूढ़े सभी लोग एकत्र होते हैं और सामुहिक रूप से संध्या करते हैं। यह गांव उन लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत है जो नित्य संध्या करने में हिचकते हैं। एक दौरे के दौरान मैंने स्वयं बच्चों को बुजुर्गों को, नौजवानों को एक साथ सायंकाल गांव की चौपाल के बीच संध्या पाठ करते हुए देखा तो मेरे हर्ष की सीमा न रही। मैंने सुना तो था परंतु ऐसा लगता नहीं था कि ऐसा होगा। इसीलिए स्वयं जाकर देखने की इच्छा थी। श्री डॉ. रामकुमार जी पटेल जो कि इसी गांव के निवासी हैं ने मुझे यह जानकारी दी तो मैंने वहां जाने का निश्चय किया। ऐसे स्थान से हम सबको यह प्रेरणा लेनी चाहिए कि हम भी अपने परिवारों के साथ कम से कम एक समय की संध्या तो किया करें। विडियो को यू ट्यूब पर भी देखा जा सकता हैं। **- विनय आर्य**

यज्ञ एवं वरिष्ठ नागरिक सम्मान समारोह आयोजित

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में दिनांक 4 अक्टूबर को यज्ञ एवं वरिष्ठ नागरिक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस आयोजन में लायन्स क्लब आकांक्षा का विशेष सहयोग रहा। समारोह में 85 वर्ष से अधिक आयु के पांच वरिष्ठ नागरिकों व 5 सर्वाधिक आयु 94 वर्षीय आर्य

समाज बाहरीरिंग रोड के संरक्षक श्री रामनाथ आहूजा को सम्मानित किया गया।-**सूर्य कान्त मिश्र**

आकर्षक वैदिक शगुन लिफाफे

नये डिजाइनों में उपलब्ध

मूल्य मात्र 3/- रुपये

प्राप्ति स्थानः

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली -110001

मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें

महर्षि दयानन्द समृति न्यास ट्रस्ट की बैठक आयोजित

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को राजस्थान स्थित जोधपुर शहर में जिस भवन में जहर दे दिया गया था। उस स्थान को महर्षि दयानन्द स्मृति स्थल के नाम से जाना जाता है। इस स्थान की देखरेख एक ट्रस्ट द्वारा की जाती है। अभी हाल ही में इस ट्रस्ट के सभी सदस्यों की एक बैठक उसी भवन में आयोजित हुई जिसमें श्री विजय सिंह भाटी जी को प्रधान एवं किशन लाल आर्य जी को महामंत्री चुना गया। बैठक में स्वामी धर्मानन्द जी उड़ीसा एवं स्वामी धर्मानन्द जी आबू, श्री देवेंद्र पाल वर्मा, श्री ओम मुनि जी, दिल्ली आर्य प्रतिनधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामंत्री श्री विनय आर्य जी एवं अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा बैंगलौर में प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में बैंगलौर में दिनांक 2 से 4 अक्तूबर 2015 तक आर्य समाजों के पदाधिकारियों का प्रशिक्षण शिविर एवं गोष्ठी आयोजित की गई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान डॉ. राधा कृष्ण वर्मा जी ने एवं सभा के उपमंत्री श्री विनय आर्य ने बैठक को विशेष रूप से सम्बोधित किया। गोष्ठी के आयोजन में प्रांत के सभी क्षेत्रों से विशेष भागीदारी रही। सभा के प्रधान श्री सुभाष अस्टीकर जी ने इस गोष्ठी को प्रांत में आर्य समाज के कार्यो को बढ़ाने के नीमित विशेष उपयोगी बताया। आर्य समाज के इतिहास, वर्तमान तथा भविष्य की योजनाओं के सम्बंध में काफी गहन चर्चा की गई। सभा के मंत्री श्री एस. वासुदेव ने सभी आगंतुक महानुभावों को आर्य समाज के कार्यो को आगे बढ़ाने के संकल्प लेने का आह्वान किया। गोष्ठी में महिलाओं एवं युवाओं की विशेष भागीदारी रही।

छत्तीसगढ़ प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रयवर्षिय अधिवेशन आयोजित

छत्तीसगढ़ प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा त्रयवर्षिय अधिवेशन 11 अक्तूबर 2015 को रायगढ़ में आयोजित किया गया। जिसमें आगामी 3 वर्षो के लिए आचार्य अंशुदेव जी को प्रधान एवं श्री दीनानाथ वर्मा को मंत्री निर्वाचित किया गया। साधारण सभा अधिवेशन में पूरे छत्तीसगढ़ प्रांत से काफी संख्या में प्रतिनिधिगण उपस्थित थे। अधिवेशन में सभा की उपलब्धियों की जानकारी दी गई तथा भविष्य में और अधिक कार्य करने के संकल्प व्यक्त किए गए। निर्वाचन अधिकारी के रूप में सार्वदेशिक सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य द्वारा नियुक्त सभा के उप मंत्री श्री विनय आर्य ने प्रांत में आर्य समाज के कार्यो को आगे बढ़ाने के लिए सभी से बढ़-चढ़कर कार्य करने का आह्वान किया तथा नवनिर्वाचित अधिकारियों से संगठन को मजबूत करने और सार्वदेशिक सभा को अधिक से अधिक सहयोग देने का आह्वान भी किया।

- मंत्री, दीनानाथ वर्मा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से निम्बाहेड़ा में आर्य साहित्य प्रचार

आर्यसमाज निम्बाहेड़ा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से दशहरा उत्सव पर लगने वाले सार्वजानिक मेले में आर्यसमाज द्वारा पहली बार साहित्य प्रचार के लिए स्टाल लगाया गया हैं। आर्यसमाज निम्बाहेड़ा नवीन समाज हैं जिसके कार्यकर्ता तन, मन, धन से स्वामी दयानंद के मिशन के लिए समर्पित हैं। **डॉ. विवेक आर्य**

चिता मंहगी ...

पृष्ठ 1 का शेष

के लिए पूर्ण योगदान दिया। सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने भविष्य में इस प्रकार के यज्ञ कार्यक्रमों को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता को महसूस करते हुए जनवरी में पुन: जनकपुरी क्षेत्र में इस प्रकार के शिविर को आयोजित करने का विचार व्यक्त किया। उन्होंने आह्वान किया कि अधिक से अधिक महानुभाव इस प्रकार के शिविरों का लाभ उठाएं।

-सतीश चड्ढा, संयोजक

चिता मंहगी या ...

पृष्ठ 1 का शेष

है, राम की भी और रहीम की भी। कानून है, संविधान है, देश के अन्दर न्यायपालिका है फिर यह उपद्रवी मानसिकता क्यों? या फिर यह लोग अपना हिंसा का मापदंड सामने रखें पर कब्र पर या चिता पर। राजनीति इन तथाकथित बुद्धिजीवियों को शोभा नहीं देती इसे देखकर तो यह लोग साहित्यकार कम और किसी मदारी के बन्दर ज्यादा नजर आते हैं कि जैसे चाहो इनसे उछलकूद करा लो।

दूसरी बात यह लोग चिल्लाकर कह रहे हैं कि देश में अल्पसंख्यक त्रस्त हैं वह हर पल खतरे में जी रहा है तो इसे मैं बकवास के अलावा कुछ नहीं कहूँगा क्योंकि जो लोग दहशत में जीवन जीते हैं वे पलायन कर जाते हैं, सीरिया में मुसलमानों के द्वारा मुसलमान त्रस्त था जर्मनी में शरण ली तो हजारों, लाखों हिन्दू बंगलादेश और पाकिस्तान के अन्दर दहशत में थे, भारत में शरण ली कश्मीर में अपना सब कुछ गवांकर हिन्दू शरणार्थी आज जम्मू व भारत के अन्य भागों में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं पर कोई एक ऐसा मुसलमान इस देश में नहीं जो दहशत के कारण भारत छोड़कर पड़ोसी देश में जाकर बसा हो! उल्टा यहां का धर्मनिरपेक्ष ताना-बाना देखकर करोड़ों मुसलमान ही बंगलादेश आदी से यहां आकर बस गये। तीसरा इखलाक की हत्या देश में कोई पहली हिंसा नहीं है जिसका दु:ख सभी को है पर जो यह लोग सार्वजनिक मंचों से लेकर विश्व के मंचों तक शोर मचा रहे हैं। इस देश के लोगों ने बड़े-बड़े दु:ख झेले हैं। 1990 में कश्मीर जल उठा था तब क्या यह साहित्यकार बहरे हो गये थे? क्या हजारों लोगों की चीखें तब इन्हें क्यों सुनायी नहीं दी? इखलाक के शव को तो दो गज जगह और मिट्टी भी नसीब हो गयी पर कश्मीर की हिंसा या बटवारे की हिंसा ने न जाने कितने शव जंगली जानवरों का निवाला बने। खैर प्रसंग बड़ा है और प्रश्न लाखों जिनका जवाब यह प्रमाण पत्रों में लिपटे साहित्कार नहीं दे पायेंगे अत: मेरी सरकारों और मीडिया से इतनी विनती है कि हालात ऐसे न बने कि हिंसा हो, यदि किन्हीं कारणों से हो भी तो उसमें पड़ने वाली मिट्टी और चिताओं से उठने वाले धुएं को सांत्वना व बराबर सम्मान दें। यदि सरकार सांत्वना राशि के मापदंड तय नहीं करेगी तो हो सकता है आगे कब्र और भी मंहगी होती जाए और मीडिया से हमारा आग्रह है कि देश में सम भाव बनाए रखने के लिए खबरों को बराबर सम्मान दें और यह खबरों को बिकने का माल न बनने दें। यह हऊआ का खेल बंद करें।

-राजीव चौधरी

आर्य सन्देश सदस्य ध्यान दें

आर्य सन्देश के सदस्यों से अनुरोध है यदि आपकी सदस्यता समाप्त हो रही है तो कृपया उसका पुन: नवीनीकरण करवा लें जिससे आपको आर्य सन्देश नियमित प्राप्त होता रहे। आर्य सन्देश की वार्षिक सदस्यता शुल्क 250/- व आजीवन सदस्यता शुल्क मात्र 1000/- है । आप अपना धनादेश/डी.डी. आर्य सन्देश, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर प्रेषित करें। **-सम्पादक**

श्री कृष्ण कुमार भाटिया राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित

आर्य समाज डी ब्लॉक जनकपुरी के सदस्य श्री कृष्ण कुमार भाटिया जी को भारत सरकार द्वारा 1965 में भारत पाक युद्ध में उनके द्वारा दी गयीं सेवाओं को ध्यान में रखते हुए 22 सितम्बर 2015 को राष्ट्रपतिभवन में 1965 युद्ध के स्वर्ण जयन्ती समारोह में राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किया गया।-**कर्मयोगी, मंत्री**

आर्ष गुरुकुल वानप्रस्थाश्रम नोएडा -33 में

श्रावणी महोत्सव चतुर्वेदशतक पारायण एवं उपनयन संस्कार

दिनांक 23-9-2015, आर्य समाज आर्ष गुरुकुल वानप्रस्थाश्रम नोएडा -33 में श्रावणी महोत्सव चतुर्वेदशतक पारायण एवं नव प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार सम्पन्न हुआ। **- मंत्री**

आर्य समाज रानीबाग द्वारा 31वां सामवेद पारायण यज्ञ

आगामी 1 नवम्बर से आर्य समाज रानीबाग सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन करने जा रहा है। कार्यक्रम निलाम्बर अपार्टमेंट रानीबाग दिल्ली-34 में प्रात: 5.30 से प्रारम्भ होगा। यज्ञ आचार्य सत्यवीर जी एवं प्रवचन श्री विनय विद्यालंकार (उत्तराखण्ड) द्वारा सम्पन्न होंगे। कार्यक्रम में आपकी उपस्थिति अपेक्षित है। **-जोगेन्द्र खट्टर, प्रधान**

पवित्र दुग्ध की नालियों में उठ रहा है झाग

श्रीराम-कृष्ण के नाम से, बढ़ रहा है पाखण्ड,
करके लोगों को भ्रमित, बन रहे पाखण्डी सण्ड।
सत्य का नहीं प्रसार करते, बकते हैं अण्ड-बण्ड,
मिथ्या वादिता के शास्त्र से, धर्म हो रहा खण्ड-खण्ड।
परमात्मा की अमरवाणी का कर रहे हैं त्याग,
पवित्र दुग्ध की नालियों में उठ रहा है झाग।
श्रीराम-कृष्ण के आदर्श, पाखण्ड में गये रल,
उनकी भक्ति का उपहास उड़ा रहे हैं खल।
निरर्थक बह रहा मूर्तियों में श्वेत जल,
कृमि-कीट आसानी से रहे हैं पल।
बेसुरा हुआ विश्व में धर्म का राग,
पवित्र दुग्ध की नालियों में उठ रहा है झाग।
अज्ञानता की थाल सजाकर घूम रहे अज्ञानी,
अन्ध श्रद्धा के पुजारी को दान कर रहे हैं दानी।
रुक गई ज्ञान गंगा, बुझ गई ज्योत्सना पावमानी,
अन्ध भक्ति वालों ने कब सत्य की बात मानी।
वे सत्य के सीने पर झूठ के गोले रहे दाग,
पवित्र दुग्ध की नालियों में उठ रहा है झाग।
पीकर अमृत तुल्य दुग्ध, फिर करते पशु को दग्ध,
वधशालाओं में भेज कर कराते उस पशु का वध।
कृतघ्नता की बढ़ गई है, बहुत ही अधिक हद,
हथिया रहे अपराधी राष्ट्र में ऊंचे-ऊचे पद।
उजड़ रहे हैं विश्व में, खुशियों के बाग,
पवित्र दुग्ध की नालियों में उठ रहा है झाग।
राजनीति दानवों का, बन गया है खिलौना,
देश भक्ति, प्रजा सेवा का कद हो गया है बौना।
सरकारी धन का राजनीतिज्ञ बना रहे बिछौना,
लोभ-लालच सिंहासनों पर मना रहे हैं गौना।
चहुं ओर देश में अराजकता की लगी है आग,
पवित्र दुग्ध की नालियों में उठ रहा है झाग।
धन्य है ऋषि दयानन्द, जो सत्य पर मिट गये,
सत्य के खातिर सत्यवादी, अपनों से ही पिट गये।
वेद रक्षा के लिये वेदविद विभाग में डट गये,
गुरुकुलों के ब्रह्मचारी चारों वेदों को रट गये।
कहें 'विवेक' बहुत गा चुका है अज्ञानता का राग,
पवित्र दुग्ध की नालियों में उठ रहा है झाग।

-पं. विवेकानन्द शास्त्री, बागपत

Continue from last issue

Glimpses of the Rig Veda

Hymn to Death-II

"O performers of sacred work, may you proceed forward, effacing the footsteps of death and prolonging the span of your useful life. May you be diligent in your dedication every moment; may you enrich yourself with progeny and affluence".

This is the second verse of the hymn. Though styled as hymn to death, the main theme is of longevity beginning with a threat to death. He has to depart to a distance and be away from active and energetic life. One dares not put his feet on the sacred pot of a sacrificial fire; so also death has no guts to attack a saintly person. It is the behaviour against the principles of morality and breaking of God's laws that is subdued by the fear of death. The one without divine qualities is as good as dead.

Surely, death connot be wiped out from the scheme of life but to the sinful, the fear of death threatens every moment. None can deny the existence of the biological death, but dying emotionally every moment is not worth living. Even in old age, one should have the zest and will-power to live a useful and meaningful life.

मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत द्राघीय आयुः पतरं दधानाः।

आप्यायमानाः प्रजया धनेन शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः।।(Rv.x.18.2)

Mrtyoh padam yopayanto yad aita draghiya ayuh prataram dadhanah.

apyayamanah prajaya dhanena suddhah puta bhabata yajniyasah..

Death Comes to all, rich or poor.

"Lord has not assigned hunger as the cause of death; since death comes to them who have been eating well", says the verse.

It is not true that only a hungry man faces death. Wealthy persons also die owing th their excessive eating, mental stress and often fall victims to theft and robbery. They lament for their lost wealth and thus lead a miserable life due to constant mental stress.

One who is born is sure to die. Wealth, if any, remaisn with the possessor till his death. the wise utilise their acquisition to alleviate the misery of others. There is no instance to see that a person becomes poor because of his doing charity in life. On the other hand, men flourish through benevolent deeds like providing relief to the needy and the poor. Others with extravagance ruin themselves. Misuse of wealth leads to bankruptcy and mental distress.

A person with no mercy and charity does not enjoy peace and joy in life. He ensures no contentment for his future life. He does not do justice to his own life, let alone doing good to others. Even a beggar does not look at a miser's dwelling for help. He who eats alone, verily, eats nothinbut commits a sin. He finds no consoler in life nor any peace or joy.

न वा उ देवाः क्षुधद्विधं ददुरुताशितमुप गच्छन्ति मृत्यवः।

उतो रयिः पृणतो नोप दस्यत्युतापृणन्मर्डीतारं न विन्दते।।(Rv.x.117.1)

Na va u devah ksudham id vadham dadur utasitam upa gachhanti mrtyavah.

uto rayih prnato nopa dasyaty utaprnan marditaram na vindate..

The Saint

A saint is not a heavenly being. He is born and brought up on earth with a human body in which he impregnates virtue and vigour by his enlightenment. He is never deterred by any worldly allurement or ambition.

The verse says,"A saint is he who is the epitome of cosmic sacrifice. He conjoins his movements with the Universal spirit. He lives for the life of others. He is the trustworthy companion of the virtuous, the firm protector of the weak and the benevolent well-wisher of all beings. Like an adept rider, he moves swiftly as the mind to invigorate the environments and the peopleall around him. He enriches himself through labour and penance. Supported by truth and righteousness, he movesahead with excellence in all fronts. When he breathess his last, he leabves the ephemeral body with a blissful sm ile".

Such a mortal is not limited to a sect, a community, a language or a land. He shares the delight as well as agony of the people surroundinghim. He leads the ignorant, the weak and the poor to their rightful place in society. He feeds the hungry from his share. He destroys evil everywhere. He frrds the hungry from his share. He is the all-time leader of all dedicated work.

प्रत्यर्धिर्यज्ञानामश्वहयो रथानाम्।

ऋषिः स यो मनुर्हितो विप्रस्य यावयत्सखः।।(Rv.x.26.5)

pratyardhir yajnanam asvahayo rathanam.

rsih sa yo manurhito viprasya yavayat sakhah..

To Be Continued...

बोध कथा

हितभुक् मितभुक् ऋतुभुक्

शरीर को ठीक रखने की क्या विधि है, इसके लिए आपको एक कहानी सुनाता हूं। समझाने के लिए शायद यह कहानी बनाई गयी है। कहानी यह है कि महर्षि चरक जब आयुर्वेद के सारे ग्रन्थ लिख चुके, सब प्रकार की विधियों का, सब प्रकार की औषधियों का, चिकित्साओं का वर्णन कर चुके और उनका प्रचार कर चुके तो उनके मन में विचार आया कि चलूं देखूं, लोग मेरे बताए हुए मार्ग पर चलते भी हैं या नहीं? मेरा परिश्रम सफल हुआ या नहीं? एक पक्षी का रूप धारण करके वे उड़े और वहां गये, जहां वैद्यों का बाज़ार था। एक वृक्ष पर बैठकर पक्षी ने ऊंची आवाज में कहा-'कोररुक्?' अर्थात् रोगी कौन नहीं?

एक वैद्य ने पक्षी को देखा, इसकी बात को समझा, बोला-'जो च्यवनप्रकाश खाता है।'

एक और वैद्य बोला-'नहीं, जो चन्द्रप्रभावटी खाता है।'

तीसरा वैद्य बोला-'जो बंग-भस्म खाए, वह अरोगी है, वह अधिक स्वस्थ है।'

चौथे वैद्य साहब बोले-'ये सब बातें ग़लत हैं। जब तक लवण-भास्कर चूर्ण नहीं खाओगे तब तक पेट ठीक नहीं होगा।'

चरक ने यह सब-कुछ सुना तो दुःख हुआ उन्हें। आश्चर्य के साथ उन्होंने सोचा-'मैंने इतना बड़ा शास्त्र रचा तो क्या मनुष्य के पेट को दवाइयों का गोदाम बना दिया जाय? मेरा परिश्रम निष्फल हो गया! कोई भी कुछ सीखा नहीं। इससे दुःखी होकर वे उड़े। कई स्थानों पर गये। हर स्थान पर उन्होंने कहा-'कोररुक्?' कहीं भी ठीक उत्तर न मिला। अन्त में दुःखी होकर एक उजाड़ सुनसान स्थान पर जा बैठे, एक सूखे वृक्ष की शाखा पर। इसके पास ही एक नदी बहती थी। नदी में नहाकर प्रसिद्ध वैद्य श्री वाग्भट्ट महाराज बाहर आ रहे थे। चरक ने उन्हें पहचाना; पुकारकर कहा-'कोररुक्?'

वाग्भट्ट चलते-चलते रुक गये। आंखें उठाकर पक्षी की ओर देखा; बोले-'हितभुक् मितभुक् ऋतुभुक्।'

चरक इन शब्दों को सुनते ही वृक्ष से नीचे आ गये; पक्षी रूप छोड़कर वाग्भट्ट के समक्ष खड़े हो गये-'तुम ठीक समझे हो वैद्यराज!'

परन्तु इस हितभुक् मितभुक् ऋतुभुक का अर्थ क्या है? अर्थ मैं समझाता हूं। ऐसी वस्तुएं खाओ, जो आपके शरीर के लिए अच्छी हैं। केवल खाने के लिए मत जियो, जीने के लिए खाओ। जिह्वा के स्वाद में फंसकर पेट में कूड़ा-करकट न भरते जाओ। यह सोचकर खाओ कि जो खाते हो, उससे लाभ क्या होगा?

साभार: बोध कथाएं

नोट: यह पुस्तक सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध है। प्राप्त करने के लिए मो. 09540040339 पर संपर्क करें।

प्रेरक प्रसंग

वे ऐसे व्यक्ति थे

19 08 की घटना होगी। पंजाब विश्वविद्यालय सीनेट के चुनाव हुए। डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर के प्राचार्य महात्मा हंसराजजी को भी प्रबन्ध समिति ने चुनाव के अखाड़े में उतरने के लिए कहा। वे पहले भी सीनेट के सदस्य थे। उन्होंने चुनाव लड़ा, परन्तु सीनेट के चुनाव में हार गये।

उन दिनों डी.ए.वी. कॉलेज की एक पत्रिका निकला करती थी। उसमें कॉलेज के समाचार भी छपा करते थे। एक समाचार यह भी छपा कि कॉलेज के प्राचार्य हंसराज चुनाव हार गये हैं।

पाठक वृन्द! क्या आज कोई छोटा-बड़ा व्यक्ति चुनाव हार जाने पर अपनी ही पत्रिका में ऐसा समाचार देने का नैतिक साहस दिखा सकता है? जिन विभूतियों ने आर्य समाज के कीर्ति-भवन के निर्माण के लिए अपना सर्वस्व दिया, वे ऐसे ही व्यक्ति थे। **साभार : तड़पवाले**

ओड़िसा आर्य समाज के संस्थापक श्रीवत्स जयंती सम्पन्न

ओड़िसा आर्य समाज के संस्थापक, प्रथम आर्य समाजी एवं ओड़िसा के गंजाम जिला अन्तर्गत तनरडा ग्राम में आर्य समाज की स्थापना करने वाले श्रीवत्स पंडा जी की 143 वीं जयंती श्रीवत्स गोरक्षा आश्रम गुरुकुल हरिपुर में वैदिक विदुषी माता शन्नो देवी तथा श्रीमती विनोदनी पंडा की अध्यक्षता में संपन्न हुई। समारोह में लगभग 2000 आर्यजन उपस्थित थे। **-वाल्मिक पटनायक**

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30=8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

12वें आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन हेतु अपने विवाह योग्य बच्चों के नाम पंजीकृत कराएं

परिचय सम्मेलन दिनांक 6 दिसम्बर 2015 आर्य समाज 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में आयोजित होगा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में देश के विभिन्न प्रान्तों के विभिन्न स्थानों पर 11 आर्य परिवार युवक -युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुए हैं जिसमें बहुत से आर्य परिवारों ने इन सम्मेलनों का लाभ उठाते हुए अपने बच्चों के विवाह संस्कार करवाये हैं। हम आपसे आशा के साथ प्रार्थना कर रहे हैं कि आपके स्वयं के बच्चे जो विवाह योग्य हैं अथवा आपके किसी परिचित के बच्चे जो किसी भी आर्य समाज से जुड़े हों, उनको भी यह सूचना पहुंचाकर 12वें आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित करें। यह सम्मेलन 6 दिसम्बर 2015 को आर्य समाज 15 हनुमान रोड नई दिल्ली-110001 में प्रात: 10 बजे होना निश्चित हुआ है। **आप अपने फार्म भरकर 20 नवम्बर तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में भेज सकते हैं। आप वैवाहिक फार्म को सभा की वेब साईट www.thearyasamaj.org/aryasandesh से डाउन लोड भी कर सकते हैं।** फार्म की छाया प्रति भी मान्य होगी।

इस सम्मेलन से जहां महर्षि दयानन्द जी के कथनानुसार '' युवक -युवती अपने गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार ही परस्पर विवाह करें'' का यह कदम आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा वहीं पर आर्य परिवारों एवं युवा पीढ़ी को आर्य समाज से जोड़ने का भी एक महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होगा।

: निवेदक :

प्रकाश आर्य	**विनय आर्य**	**अर्जुन देव चड्ढ़ा**	**एस.पी.सिंह,**
मंत्री	महामंत्री	राष्ट्रीय संयोजक	संयोजक दिल्ली राज्य
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा	**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**	**आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन**	
मो. 09826655117	मो. 09958174441	मो. 09414187428	मो. 09540040324

: प्रांतीय संयोजक :

गुजरात, सुरेश चन्द्र अग्रवाल-09824072509; राजस्थान, अमरमुनि -09214586018; उत्तर प्रदेश, डॉ. अशोक आर्य -09412139333; आन्ध्र प्रदेश, डॉ. धर्मतेजा-09848822381, छत्तीसगढ़, दीनानाथ वर्मा -09826363578; महाराष्ट्र, डॉ. ब्रह्ममुनि -09421951904; उत्तराखण्ड, विनय विद्यालंकार-09412042430; विदर्भ, कृष्ण कुमार शास्त्री- 09579768015; जम्मू-कश्मीर, राकेश चौहान- 09419206881; हरियाणा, कन्हैयालाल आर्य-09911179073, हिमाचल प्रदेश, रामफल आर्य-09418277714; ओडिशा, स्वामी सुधानन्द-0986133060; मध्य भारत, डॉ. दक्षदेव गौड़-09425907070; पंजाब, दिनेश शर्मा-09872880807; महिला संयोजिका, वीना आर्या- 09810061263; रश्मि वर्मा- 09971045191; विभा आर्या-09873054398

दुकान से खदान तक और खदान से दुकान तक

...शिक्षा ग्रन्थ से वर्णों के स्थान, करण, प्रयत्न, वायुपीडन आदि ही मिलेंगे। व्याकरण में शब्दार्थ सम्बन्ध मिलेंगे। उसकी पूर्ति निरुक्त के निर्वचनों से होगी। कुन्द:शास्त्र में केवल छन्दों का अध्ययन होगा। कल्प ग्रन्थों में मन्त्रों के विनियोग और ज्योतिष शास्त्र में केवल काल का अध्ययन होगा। किन्तु वेद तो इन सब शास्त्रों से सजी दुकान है। उसमें सब कुछ मिलेगा। सब विद्याएं सब कलाएं मिलेंगी। सब प्रकार के विज्ञान मिलेंगे। अत: सभी विद्वानों को, डॉक्टरों, इंजीनियरों, वकीलों, किसानों, शिक्षकों और सब मनुष्यों को वेदों की सुसज्जित मन्त्रों और ऋचाओं वाले काव्य दुकान में अवश्य दिन प्रतिदिन जाना चाहिए।....

खदान, दुकान और उपभोक्ता का क्रम चक्रवत् नहीं है। उपभोक्ता दुकान तक जाता है खदान तक नहीं और आजकल खदानों तक भी उपभोक्ताओं की सीधी पहुंच है। खदान और दुकान का मतलब समझाना आवश्यक नहीं है। यह तो सब जानते हैं। सामान का उत्पादन जहां से हो रहा है वह खदान है और जहां वह विनिमय विक्रय के लिए पहुंचता है वह दुकान है। खदान में एक ही प्रकार का सामान उपलब्ध होगा। दुकान में तरह-तरह के सामान मिलते हैं। यही बात वेद और वेदांगों की है। वेदांग खदान हैं? वहां एक-एक विषय का ही लाभ होता है। जैसे शिक्षा ग्रन्थ से वर्णों के स्थान, कारण, प्रयत्न, वायुपीडन आदि ही मिलेंगे। व्याकरण में शब्दार्थ सम्बन्ध मिलेंगे। उसकी पूर्ति निरुक्त के निर्वचनों से होगी। छन्द:शास्त्र में केवल छन्दों का अध्ययन होगा। कल्प ग्रन्थों में मन्त्रों के विनियोग और ज्योतिष शास्त्र में केवल काल का अध्ययन होगा। किन्तु वेद तो इन सब शास्त्रों से सजी दुकान है। उसमें सब कुछ मिलेगा। सब विद्याएं सब कलाएं मिलेंगीं। सब प्रकार के विज्ञान मिलेंगे। अत: सभी विद्वानों को, डॉक्टरों, इंजीनियरों, वकीलों, किसानों, शिक्षकों और सब मनुष्यों को वेदों की सुसज्जित मन्त्रों और ऋचाओं वाले काव्य दुकान में अवश्य दिन प्रतिदिन जाना चाहिए।

सत्संग, गुरुकुल, आर्य विद्यालय, डी.ए.वी. आदि खदान हैं। आर्य समाज की दुकानें इन्हीं से चल रही हैं। यदि ये खदानें बन्द हो जाएं तो आर्य समाज की दुकान में क्या सामान आएगा। अत: खदानों की क्वालिटी अच्छी होगी तो दुकानों में अच्छी क्वालिटी के सामान पहुंचेंगे। गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल वृन्दावन, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, गुरुकुल एटा, गुरुकुल झज्जर, गुरुकुल आमसेना, गुरुकुल कनकधारा, दर्शन योग महाविद्यालय एवं अन्यान्य बहुत से कन्या गुरुकुल आदि खदान हैं। किन्तु धनेच्छा, पदेच्छा, अभ्युदयेच्छा से गुरुकुलों की सामानें सरकार के अधीन चली जा रही है। अत: आर्य समाज के संरक्षण पर दिनोदिन आशंका उन्हीं के दिलों में उठ रही हैं जिनको अपने ईमान कच्चे लग रहे हैं। आर्य समाज की मादकता सांप के विष की तरह नहीं तो कम से कम अमृत जड़ी बूटियों के पेय की तरह तो चढ़े। दीवानगियों की कहानियां क्या दीवानगी जगाने में हार मान गयी? समुद्र के जल की तरह हमारी उपयोगिता न हो बल्कि पिपासुओं के प्यास बुझाने वाले कुएं, बावड़ी, नल, प्याऊ की तरह बनें। रण छोड़ भीरुओं की तरह पलायन करना आर्यरक्त की शुद्धता पर संदेह पैदा करेगा। पराक्रम और पलायन की उल्टी दिशा है। लक्ष्य की ओर आगे, आगे बढ़ना पराक्रम है और लक्ष्य से घीरे-धीरे खिसक जाना पलायन। परा + क्रम परा + अयन र कोल पार+ अयन पारायण। पारायण। वेदों के पार चले जाना पारायण है। पारायण और पराक्रम प्रशंसित हैं। पलायन गर्हित है।

आर्य समाज को धन, सत्ता, व्यवस्था की दृष्टि से न केवल सरकार से अपितु अन्य संस्थाओं, संघों, संगठनों और मत मतान्तरों से भी अपनी महत्ता आगे रखनी होगी और तदनुरूप रीति नीति और पद्धति जो धर्मानुकूल व्यवहारानुकूल हो वह अपनानी पड़ेगी। तब यह आत्म संतोष और उत्साह तथा गर्व का विषय बनेगा। संख्या न सही गुणवत्ता अच्छी हो।

आर्य समाज सारे संसार को वेद दे रहा है। आर्य समाज सारे संसार को औचित्य न्याय, आदर्श, सत्कार्य, योग, देश प्रेम, धर्म, ईश्वर और संस्कार में वैज्ञानिकता दे रहा है। आर्य समाज सत्य दे रहा है। आर्य समाज प्रेम, प्रीति, आत्मीयता, स्नेह, दुलार परोपकार देने में कहीं पीछे नहीं है, नहीं रहेगा। आर्य समाज अवदात यश और उदस्त विचार के लिए त्रिभुवन वन्द्य है। आईये खदान दुकान और उपभोक्ताओं में सामञ्जस्य बिठायें। **-आचार्य धञ्जय शास्त्री**

आर्य समाज गोविन्दपुरम, गाजियाबाद का 15वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज गोविन्दपुरम, गाजियाबाद दिनांक 23 से 25 अक्टूबर 2015 को अपना 15वां वार्षिकोत्सव चौधरी चरण सिंह पार्क, डी-ब्लॉक, गोविन्दपुरम, गाजियाबाद में आयोजित कर रहा है। जिसके अन्तर्गत वेद, आध्यात्मिक, संस्कृति रक्षा, आर्य युवक निर्माण एवं राष्ट्र रक्षा सम्मेलन एवं धनुर्विद्या एवं योग का भव्य प्रदर्शन होगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री योगानन्द शास्त्री (पूर्व विधान सभा अध्यक्ष दिल्ली सरकार) होंगे।

-सतीश कुमार साहरन,
मंत्री मो. 09990471255

आर्य समाज नजफगढ़, दिल्ली का 103 वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज नजफगढ़ दिनांक 23 से 25 अक्टूबर 2015 को अपना 103वां वार्षिकोत्सव बारातघर, निकट मदर डेयरी बूथ (छावला बस स्टैंड) न. दिल्ली-43 में आयोजित कर रहा है। विशेष अतिथि स्वामी सुमेधानन्द सांसद(सीकर) श्री प्रवेश वर्मा सांसद (प. दिल्ली) डॉ. योगेन्द्र शास्त्री (पूर्व अध्यक्ष दि. वि. सभा) श्री राजेश गहलोत (पूर्व विधायक) एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामंत्री श्री विनय आर्य एवं अनेकों गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं।

-आर्य रवि छिकारा, मंत्री,
मो. 09911186500

साप्ताहिक आर्य सन्देश

19 अक्टूबर से 25 अक्टूबर, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 22 अक्टूबर/ 23 अक्टूबर, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 21 अक्टूबर, 2015

स्वास्थ्य चर्चा

गुर्दे व पथरी का दर्द

1. सुहागा भुना, नौसादर, कलमी शोरा एक-एक ग्राम पीसकर दर्द के समय आधा ग्राम दवा नींबू रस दो तीन चम्मच के साथ लें।
2. फिटकरी भुनी एक-एक ग्राम दिन में तीन बार पानी से लें।
3. अदरक रस 10 ग्राम में हींग भुनी एक रत्ती पीसकर नमक मिलाकर पीयें।
4. 25 ग्राम अजमोद को 500 ग्राम पानी में उबालें। आधा रह जाने पर ठंडा कर आधा-2 कप 3-3 घण्टे बाद पीयें।
5. खेंदचीनी, शोरा कलमी, नौसादर, सुहागा भुना, फिटकरी भुनी 10-10 ग्राम पीस लें। डेढ़ ग्राम दवा आधा कप पानी में घोलकर प्रात: सायं लें।
6. जीरा काला 20 ग्राम अजवायन 10 ग्राम काला नमक 5 ग्राम पीसकर सिरके में मिलाकर 3-3 ग्राम प्रात: सांय लें।

चेहरे की झाईयां दूर हों

1. अरंडी के तेल में बेसन मिलाकर लगाएं। झाईयां दूर होगी।
2. सरसों पीली दूध में पीसकर रात को चेहरे पर लगाएं। प्रात: गर्म पानी से धो दें।
3. हल्दी और तिल 10-10 ग्राम पानी में पीसकर रात को चेहरे पर लगाएं प्रात: कम पानी से धो दें।
4. रीठे के छिलके को पानी में पीस कर चेहरे पर लगाने से सभी प्रकार के दाग धब्बे साफ हो जाते हैं।

वैद्य खेम भाई द्वारा रचित ''चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद'' पुस्तक से साभार यह पुस्तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में भी उपलब्ध है। अपना आदेश मो. 09540040339 पर या सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड दिल्ली-110001 के पते पर भेज सकते हैं।

आपके पत्र

आर्य समाज गो हत्या का विरोधी

वर्तमान समय में छिड़ी गौ हत्या व गौ मांस की बहस भयानक रूप लेती जा रही है। नित्य कोई न कोई चर्चा पक्ष-विपक्ष में होती रहती है। इस विषय में कुछ तथाकथित विद्वान टीवी चैनलों या मीडिया में वेदादि शास्त्रों के झूठे प्रमाण दिये जाते हैं। जैसे वेदों में मांस, गो मांस या मांस खाने का प्रसंग नहीं है। वेदों में तो स्पष्ट कहा है कि 'गां मां हिंसी', गाय की हिंसा मत करो, 'अश्वं मा हिंसी' घोड़ों की हिंसा मत करो, 'अजां मां हिंसी', बकरों की हिंसा मत करो, 'मा मा हिंसी' किसी जीव की हिंसा मत करो। यजुर्वेद।

कुछ विद्वान यजुर्वेद में आए गौ मेघ यज्ञ, अश्व मेघ यज्ञ, पितृ मेघ सर्व मेघ यज्ञों का हवाला देकर वेदों में गौ हत्या का झूठा प्रमाण देते रहते हैं, वे ये बताएं कि मेघ का अर्थ यदि आहुति है तो पितृ में अपने माता-पिता की आहुति दोगे क्या? वेदों में मेघ शब्द का अर्थ रक्षा है। अत: गाय आदि पशु-पक्षियों की रक्षा करनी चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती जो वेदों के विद्वान और भाष्यकार हैं उनकी मान्यता है कि गाय की हत्या नहीं करनी चाहिए। क्योंकि गाय अपने जीवन में लगभग 1300 मनुष्यों का पेट दूध, घी और औषधियों से भर देती हैं। ऋग्वेद के मंडल 8, सूक्त 10 मंत्र 1-15 में परमात्मा का आदेश है कि हे! मनुष्य तू गो की हत्या मत कर यह तो अमृत का केन्द्र है। अत: समस्त आर्य समाजें गौ हत्या का घोर विरोध करती हैं और गौ पालन का समर्थन।

- राकेश मेहरा,
महामंत्री, आर्य समाज शक्ति नगर,
अमृतसर

प्रतिष्ठा में,

चुनाव समाचार

आर्य समाज भीमगंज मण्डी, कोटा जं.

प्रधान - **श्री प्रेम नाथ कौशल**
मंत्री - **श्री धीरेन्द्र गुप्ता**
कोषाध्यक्ष - **श्री मनोज गुप्ता**

श्री जगत वर्मा को पितृ शोक

आर्य जगत के भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा के पूज्य पिता श्री शिवपाल जी का 94 वर्ष की आयु में 10 अक्टूबर 2015 को लालडू मण्डी में देहांत हो गया। अंतिम संस्कार उनके पौत्र श्री संजीव कुमार वेदालंकार ने पूर्ण वैदिक रीति से संपन्न कराया। शोक सभा 25 अक्टूबर चंडीगढ़-अम्बाला जीटी रोड स्थित लालडू मण्डी में सम्पन्न होगी। **मो. 09815031131**

वधू चाहिए

हैदराबाद के हाईटेकसिटी में कार्यरत 34 वर्षीय विकलांग सीनियर साफ्टवेयर इंजीनियर को 24 से 28 वर्षीय कम से कम 10वीं तक शिक्षित, वैदिक संस्कृति-संस्कार युक्त, सौम्य तथा प्रशांत प्रवृत्ति युक्त एवं शुद्ध शाकाहारी, गरीब परिवार की या अनाथाश्रम में रहने वाली या कन्या गुरुकुल में पढ़ने वाली वधू चाहिए।जात-पात का कोई बन्धन नहीं। गुण-कर्म-स्वभाव को ही प्राथमिकता दी जाएगी। **सम्पर्क करें - मो. 08142772392, 09885667682**

वधू चाहिए

गुड़गांव में कार्यरत 29 वर्षीय बीई (कम्प्यूटर साइंस) कद 5'6'', रंग गहूंआ, गोत्र कण्व दिल्ली निवासी। गुण -कर्म -स्वभाव को ही प्राथमिकता दी जाएगी। पिता भा.वा.से. से सेवानिवृत।

सम्पर्क करें - मो. 09891409388

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह